टिप्पणी

10

हिन्दुस्तानी संगीत के प्रणेता

पं. विष्णु नारायण भातखंडे तथा पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर

आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत के वर्तमान स्वरूप के अस्तित्व का श्रेय मुख्यत: संगीत के क्षेत्र में दो महान दिग्गजों के अभूतपूर्व योगदान को जाता है, **विष्णु द्वय – पं. विष्णु नारायण भातखंडे एवं पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर।** दोनों ने ही संगीत की उन्नति तथा विकास के लिये समुचित संस्थाओं की स्थापना की तथा जन साधारण में संगीत के प्रचार के लिये महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। दोनों ही हिन्दुस्तानी संगीत के शास्त्र पक्ष के पुनर्गठन तथा उसके क्रियात्मक पक्ष के साथ तालमेल करने के लिये उत्तरदायी थे।

पं. भातखंडे के प्रमुख योगदानों में रागों का ठाठों के अंतर्गत वर्गीकरण, समय सिद्धांत की व्याख्या, स्वरलिपि पद्धति, संगीत से सम्बन्धित संस्कृत कृतियों का संपादन एवं प्रकाशन, संगीत संस्थानों की स्थापना एवं विभिन्न पुस्तकों तथा लेखों का लेखन सम्मिलित हैं। पं. पलुस्कर के योगदानों में अभद्र शब्दों के स्थान पर भक्ति अथवा उपासना युक्त तत्वों का समावेश करके बंदिशों की पुन: रचना, संगीत संस्थानों की स्थापना, स्वर लिपि पद्धति तथा संगीत से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों एवं लेखों का लेखन सम्मिलित है।

हिन्दुस्तानी संगीत जगत की इन दो महान विभूतियों के निरंतर प्रयासों के फल स्वरूप संगीत की विभिन्न रचनाओं एवं संगीत से सम्बन्धित प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का समय रहते प्रकाशन हो पाया, अन्यथा कालक्रम में वे विलुप्त हो जाते।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन से, विद्यार्थी इस योग्य हो पायेंगे कि

- पं. भातखंडे के योगदान के बारे में बता सकेंगे;

टिप्पणी

- पं. पलुस्कर के योगदान को बता सकेंगे;
- पं. भातखंडे तथा पं. पलुस्कर द्वारा आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत को आकार देने में उनकी भूमिका का उल्लेख कर सकेंगे;
- जन साधारण में हिन्दुस्तानी संगीत के प्रचार में इनकी भूमिका का विवरण दे सकेंगे;
- आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत पर इनके प्रयासों के प्रभाव का उल्लेख कर सकेंगे।

10.1 पं. विष्णु नारायण भातखंडे (1860-1936 ई.)

पं. विष्णु नारायण भातखंडे का जन्म 10 अगस्त 1860 ई. को हुआ। यद्यपि इनकी शिक्षा वकालत के लिये हुई थी, लेकिन इनके जीवन का परम लक्ष्य संगीत बन गया। आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत के प्रतिष्ठाता के रूप में माननीय पं. भातखंडे ने संगीत की उन्नति एवं विकास सुनिश्चित करने के लिये कई कदम उठाये। इनके योगदानों का परिमाण इतना बृहत् था कि हिन्दुस्तानी संगीत का पुनरुत्थान आरम्भ करने के लिये काफी था।

10.2 पं. भातखंडे के योगदान

पं. भातखंडे के कुछ प्रमुख योगदान इस प्रकार हैं:

10.2.1 रागों का ठाठों के अंतर्गत वर्गीकरण

हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र में पं. भातखंडे के सबसे महत्त्वपूर्ण योगदानों में से एक था रागों का दस ठाठों के अंतर्गत वर्गीकरण दस ठाठों के नाम इस प्रकार हैं:-

1. **यमन**
2. **बिलावल**
3. **खमाज**
4. **भैरव**
5. **पूर्वी**
6. **मारवा**
7. **काफी**
8. **आसावरी**
9. **भैरवी**
10. **तोड़ी**

10.2.2 रागों के समय-सिद्धांत की व्याख्या

पं. भातखंडे का एक अन्य महत्त्वपूर्ण योगदान था– उनके द्वारा की गई रागों के

पारम्परिक समय–सिद्धांत की व्याख्या। उन्होंने स्वरों के आधार पर रागों के लिये विशिष्ट कालावधि निर्धारित करने की एक अत्यंत व्यवस्थित प्रणाली निर्मित की। उनकी अनोखी प्रणाली के माध्यम से रागों का वस्तुतः एक क्लिष्ट समय–सिद्धांत समझने में अधिक सहज एवं सरल बन पाया।

10.2.3 भातखंडे स्वरलिपि पद्धति

उन्होंने सांगीतिक रचनाओं को संग्रहित करने व सीखने के लिये एक साधन के रूप में स्वरलिपि पद्धति का विकास किया। तत्कालीन संगीत मौखिक परम्परा के रूप में सिखाया जाता था। रचनायें आसानी से उपलब्ध नहीं होती थीं। संगीतज्ञ रचनाओं को अपनी निजी सम्पत्ति समझते थे व उनसे अलग होने में हिचकिचाते थे। पं. भातखंडे ने लगभग 1,200 रचनाओं का क्रमिक पुस्तक मालिका श्रृंखला के छह भागों के अंतर्गत संकलन किया। मूल रूप से मराठी में संकलित इस श्रृंखला में घरानेदार रचनाओं एवं स्वर विस्तार युक्त रागों का वर्णन भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में दिया गया है।

10.2.4 संगीत संबन्धी दुर्लभ संस्कृत ग्रंथों का संपादन एवं प्रकाशन

पं. भातखंडे को कई प्राचीन तथा दुर्लभ संगीत संबन्धी संस्कृत ग्रंथों के संपादन एवं प्रकाशन का श्रेय जाता है, जो अन्यथा समय बीतने पर विलुप्त अथवा नष्ट हो जाते।

10.2.5 संगीत संस्थाओं की स्थापना

उन्होंने संगीत के संस्थागत शिक्षण की आवश्यकता अनुभव की तथा 1918 ई. में ग्वालियर में माधव संगीत विद्यालय एवं 1923 ई. में लखनऊ में मैरिस कॉलेज ऑफ म्यूजिक की स्थापना की।

10.2.6 पुस्तकें व लेख

उन्होंने अपने जीवन काल में हिन्दुस्तानी संगीत के विभिन्न पहलुओं से संबन्धित अनके पुस्तकें व लेख लिखे। उनमें से कुछ के नाम नीचे दिये गये हैं:–

1.	श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम्	–	संस्कृत
2.	अभिनव राग मंजरी	–	संस्कृत
3.	अभिनव ताल मंजरी	–	संस्कृत
4.	हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति (चार भागों में)	–	मराठी (हिन्दी अनुवाद 'भातखंडे संगीत शास्त्र)

टिप्पणी

5. क्रमिक पुस्तक मालिका (छह भागों में) – मराठी (हिन्दी अनुवाद)

6. स्वर मालिका – गुजराती वर्णों में स्वर लिपि की पुस्तक

7. गीत मालिका – सांगीतिक रचनाओं युक्त पत्रिका

8. ए कंपेरेटिव स्टडी ऑफ म्यूजिक सिस्टमस ऑफ द 15, 16 17 एन्ड 18 सेन्च्यूरीज़ (अंग्रेजी एवं हिन्दी अनुवाद)

पाठगत प्रश्न 10.1

1. पं. वि. ना. भातखंडे का जन्म कब हुआ था? उनकी शिक्षा किस व्यवसाय के लिये हुई थी?

2. हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र में पं. भातखंडे के सबसे महत्त्वपूर्ण योगदानों में से एक क्या था?

3. पं. भातखंडे के काल में संगीत की शिक्षा किस प्रकार होती थी?

4. क्रमिक पुस्तक मालिकाशृंखला के अंतर्गत पं. भातखंडे ने कितनी रचनाओं का संकलन किया?

5. पं. भातखंडे द्वारा स्थापित संस्थाओं के नाम बताइये।

10.3 पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर (1872-1931 ई.)

18 अगस्त, 1872 ई. में जन्में पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर की आँखों की ज्योति बचपन में चली गई थी। इस कारणवश वे अपनी नियमित शिक्षा जारी न रख सके तथा मिरज जाकर ग्वालियर घराने के पं. बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर के समक्ष संगीत शिक्षा ग्रहण करने लगे। उनके समय में संगीतज्ञों को समाज में विशेष आदर प्राप्त नहीं था। संगीतज्ञों की इस परिस्थिति को बदलने का उत्तरदायित्व उन्होंने स्वयं लिया तथा अपना संपूर्ण जीवन संगीत के प्रसार एवं प्रचार में लगा दिया। 1931 ई. में लकवा से पीड़ित होने पर उनकी मृत्यु हो गई।

10.4 पं. पलुस्कर के योगदान

पं. पलुस्कर के कुछ प्रमुख योगदान इस प्रकार हैं:-

टिप्पणी

10.4.1 भक्ति भाव के समावेश हेतु रचनाओं को पुन:निर्मित किया। उनके जीवनकाल में रचनाओं में प्रयुक्त शब्दों के स्तर में गिरावट आ गई थी। इस कारणवश, संगीतज्ञों तथा संगीत के प्रति साधारणत: आदर की एक कमी थी। इस परिस्थिति को बदलने के लिये वे रचनाओं में भक्ति भाव युक्त शब्दों का समावेश करने लगे।

10.4.2 संगीत संस्थाओं की स्थापना

पं. भातखंडे के समान पं. पलुस्कर को भी हिन्दुस्तानी संगीत में शिक्षा प्रदान करने के लिये समुचित संस्थाओं की आवश्यकता महसूस हुई। 1901 ई. में लाहौर में उन्होंने गंधर्व महाविद्यालय नाम से पहली संगीत संस्था की स्थापना की। तत्पश्चात् उन्होंने 1908 ई. में इसकी एक अन्य शाखा मुम्बई में खोली। आज भी इनके शिष्य भारत भर में इस संस्था की कई शाखायें चला रहे हैं।

10.4.3 पलुस्कर स्वरलिपि पद्धति

उन्हें पलुस्कर स्वरलिपि पद्धति नामक हिन्दुस्तानी संगीत की एक स्वरलिपि पद्धति के प्रणेता के रूप में श्रेय जाता है। गंधर्व महाविद्यालय की विभिन्न शाखाओं एवं राग विज्ञानश्रृंखला जैसी कुछ पुस्तकों में यह पद्धति अभी भी प्रयोग में लाई जाती है।

10.4.4 पुस्तकें एवं लेख

अपने जीवनकाल में उन्होंने लगभग पचास पुस्तकें लिखीं तथा 'संगीतामृत प्रवाह' नामक पत्रिका भी आरम्भ की। उनके द्वारा लिखी गई कुछ पुस्तकों के नाम नीचे दिये गये हैं:-

1. संगीत बाल प्रकाश
2. बाल बोध
3. राग प्रवेश (20 भाग)
4. संगीत शिक्षक
5. महिला संगीत

पाठगत प्रश्न 10.2

1. पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का जन्म कब हुआ?

2. मिरज में उन्होंने संगीत किनसे सीखा?

3. पं. पलुस्कर द्वारा 1901 ई. में लाहौर में स्थापित प्रथम संगीत संस्था का क्या नाम था?

4. पं. पलुस्कर द्वारा प्रकाशित जरनल का नाम बताइये।

10.5 आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत पर पं. भातखंडे तथा पं. पलुस्कर के प्रयासों का प्रभाव

पं. भातखंडे तथा पं. पलुस्कर के प्रयासों के फलस्वरूप हिन्दुस्तानी संगीत जन साधारण में प्रचलित हो पाया। पहले, हिन्दुस्तानी संगीत सीखने के इच्छुक किसी विद्यार्थी को कई साल केवल संगीतज्ञों को प्रसन्न करने में व्यतीत करने पड़ते थे। संगीतज्ञ अपनी सनक अथवा इच्छानुसार प्रशिक्षण देते थे। बंदिशों को वे अपनी निजी सम्पत्ति समझते थे।

हिन्दुस्तानी संगीत के इन दो पथप्रदर्शकों के अथक प्रयासों द्वारा बंदिशें जन साधारण के लिये सुलभ बन पाईं। संस्थाओं के खुलने से विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा के लिये एक अनुकूल शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध हो पाया। तत्पश्चात् वे गुणी संगीतज्ञों के संरक्षण में विशेष योग्यता प्राप्त कर सकते थे। पं. भातखंडे तथा पं. पलुस्कर के प्रयासों के ही परिणामस्वरूप हिन्दुस्तानी संगीत का पुनरुत्थान हुआ तथा समाज में उसका अधिकारपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ।

पाठगत प्रश्न 10.3

1. किनके प्रयासों के फलस्वरूप हिन्दुस्तानी संगीत जन साधारण में प्रचलित हो पाया?

2. पहले, हिन्दुस्तानी संगीत सीखने के इच्छुक कौन विद्यार्थी को कई साल क्या करने में व्यतीत करने पड़ते थे?

3. किनके द्वारा बंदिशें जन साधारण के लिये सुलभ बन पाईं?

4. संस्थाओं के खुलने से विद्यार्थियों को किस प्रकार लाभ हुआ?

5. किनके प्रयासों के परिणामस्वरूप हिन्दुस्तानी संगीत को समाज में उसका अधिकारपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ?

आपने क्या सीखा

पं. विष्णु नारायण भातखंडे तथा पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर दोनों ही आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत के स्तंभ हैं। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन हिन्दुस्तानी संगीत की उन्नति एवं विकास में लगा दिया। भारत के विभिन्न भागों में संगीत के प्रचार व प्रसार के लिये संगीत संस्थाओं की स्थापना करने का श्रेय इन्हें ही जाता है। इनके प्रयासों के परिणामस्वरूप हिन्दुस्तानी संगीत के पुनरुत्थान हेतु एक आन्दोलन का आरम्भ हो गया।

पाठांत प्रश्न

1. पं. विष्णु नारायण भातखंडे तथा पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत को आकार देने में किस प्रकार उत्तरदायी हैं?
2. पं. भातखंडे के योगदान का वर्णन करें।
3. पं. पलुस्कर के योगदान का वर्णन करें।
4. जन साधारण में हिन्दुस्तानी संगीत के प्रचार में इनकी भूमिका का वर्णन करें।
5. आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत पर पं. भातखंडे तथा पं. पलुस्कर के प्रयासों के प्रभाव का उल्लेख करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1

1. पं. भातखंडे का जन्म 10 अगस्त 1860 ई. को हुआ। उनकी शिक्षा वकालत के लिये हुई थी।
2. हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र में पं. भातखंडे के सबसे महत्त्वपूर्ण योगदानों में से एक था रागों का दस ठाठों के अंतर्गत वर्गीकरण।
3. पं. भातखंडे के काल में संगीत की शिक्षा मौखिक परम्परा के रूप में होती थी।
4. क्रमिक पुस्तक मालिकाशृंखला के अंतर्गत पं. भातखंडे ने 1,200 रचनाओं का संकलन किया।
5. 1918 ई. में ग्वालियर में माधव संगीत विद्यालय एवं 1923 ई. में लखनऊ में मैरिस कॉलेज ऑफ म्यूजिक।

टिप्पणी

10.2

6. पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का जन्म 18 अगस्त, 1872 ई. में हुआ।
7. मिरज में उन्होंने ग्वालियर घराने के पं. बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर से संगीत सीखा।
8. गंधर्व महाविद्यालय।
9. संगीतामृत प्रवाह।

10.3

1. पं. भातखंडे तथा पं. पलुस्कर।
2. पहले, हिन्दुस्तानी संगीत सीखने के इच्छुक किसी विद्यार्थी को कई साल केवल संगीतज्ञों को प्रसन्न करने में व्यतीत करने पड़ते थे।
3. पं. भातखंडे तथा पं. पलुस्कर।
4. संस्थाओं के खुलने से विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा के लिये एक अनुकूल शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध हो पाया।
5. पं. भातखंडे तथा पं. पलुस्कर।

पारिभाषिक शब्दावली

1. घरानेदार – हिन्दुस्तानी संगीत में ख्याल विधा के घरानों की गुरु-शिष्य परम्परा का पीढी दर पीढी निर्वाह।
2. स्वरलिपि पद्धति – बंदिश के विभिन्न पक्ष जैसे स्वर, पद एवं ताल के तत्त्वों को दर्शाने के लिये लिखित चिह्नों का प्रयोग करने की पद्धति।
3. मौखिक परम्परा – एक पीढ़ी से दूसरी पीढी तक मुख के बोल से शिक्षा प्रदान करना।
4. राग – हिन्दुस्तानी संगीत में सांगीतिक अनुक्रम विन्यास।
5. पुनरुथान – आन्दोलनकारी रूप से फिर से प्रचार में लाना जैसा कि 14-15 वीं शताब्दी के यूरोपीय कला और साहित्य के लिये हुआ।
6. ठाठ – आरोहात्मक क्रम युक्त सात स्वरों का जन्य समूह।